E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
Impact Factor (RJIF):7.23
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2024; 6(1): 113-116
Received: 10-01-2024
Accepted: 15-02-2024

प्रगति झा
शोधार्थी, प्राचीन भारतीय इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा बिहार, भारत

Corresponding Author:
प्रगति झा
शोधार्थी, प्राचीन भारतीय इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा बिहार, भारत

संस्कारों में धार्मिक अनुष्ठानों का महत्व

प्रगति झा

DOI: https://www.doi.org/10.33545/27068919.2024.v6.i1a.1744

सारांश
भारतीय संस्कृति में संस्कार और धार्मिक अनुष्ठान अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। संस्कार जीवन के प्रत्येक चरण को अनुशासित और पवित्र बनाने का साधन हैं, जबकि धार्मिक अनुष्ठान इन संस्कारों को पूर्णता प्रदान करते हैं। वैदिक काल से लेकर आधुनिक समय तक धार्मिक अनुष्ठान संस्कारों की आत्मा माने गए हैं। चाहे जन्म हो, शिक्षा का आरंभ हो, विवाह हो या मृत्यु, प्रत्येक संस्कार धार्मिक अनुष्ठानों के साथ ही संपन्न होता है। यह शोधपत्र संस्कारों में धार्मिक अनुष्ठानों की अनिवार्यता और महत्व का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें यह विवेचना की गई है कि वैदिक मंत्रोच्चार, यज्ञ, हवन, आहुति, संकल्प और आशीर्वाद जैसे अनुष्ठान संस्कारों को कैसे सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक आयाम प्रदान करते हैं। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि धार्मिक अनुष्ठानों ने समाज में एकता, सामूहिक चेतना और सांस्कृतिक निरंतरता को कैसे बनाए रखा। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि धार्मिक अनुष्ठान केवल कर्मकांड नहीं हैं, बल्कि वे संस्कारों की आत्मा हैं। इनके बिना संस्कार अधूरे और निरर्थक हो जाते हैं। अनुष्ठान व्यक्ति को धर्म और संस्कृति से जोड़ते हैं, परिवार और समाज को एक सूत्र में बाँधते हैं तथा मानव जीवन को गहरी आध्यात्मिकता और अनुशासन प्रदान करते हैं। इस प्रकार संस्कारों में धार्मिक अनुष्ठानों का महत्व केवल धार्मिक या आध्यात्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक भी है।

कुटशब्द: संस्कार, धार्मिक अनुष्ठान, वैदिक परंपरा, यज्ञ, हवन, मंत्रोच्चार, सामाजिक एकता

परिचय
भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ धर्म और जीवन को अलग-अलग नहीं माना गया। जीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक कार्य और प्रत्येक निर्णय को धर्म से जोड़कर देखा गया। यही कारण है कि भारतीय समाज में *संस्कार* और *धार्मिक अनुष्ठान* दोनों एक-दूसरे के पूरक बन गए। संस्कार वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जीवन को शुद्ध और अनुशासित बनाती है, जबकि धार्मिक अनुष्ठान वे माध्यम हैं जिनके द्वारा संस्कारों की विधि पूरी होती है।

धार्मिक अनुष्ठानों का स्वरूप बहुआयामी है। इसमें मंत्रोच्चार, हवन, यज्ञ, आहुति, देवता की स्तुति, आशीर्वाद और संकल्प आदि सम्मिलित हैं। धर्मशास्त्रों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि बिना अनुष्ठान के संस्कार अपूर्ण रहते हैं [1]। उदाहरणस्वरूप, विवाह संस्कार केवल एक सामाजिक अनुबंध नहीं है, बल्कि यह यज्ञीय अनुष्ठान के रूप में संपन्न होता है। इसी प्रकार उपनयन संस्कार में गायत्री मंत्र का उच्चारण और यज्ञोपवीत धारण करना अनिवार्य माना गया है।

संस्कारों में धार्मिक अनुष्ठानों का महत्व केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी गहरा है। अनुष्ठानों ने समाज में सामूहिकता की भावना विकसित की। जब किसी संस्कार के अवसर पर पूरा परिवार और समुदाय एकत्र होकर मंत्रोच्चार, हवन और पूजा में सम्मिलित होता है, तो यह केवल धार्मिक कृत्य नहीं, बल्कि सामाजिक एकता और सहयोग का प्रतीक बन जाता है। इसी कारण भारतीय समाज में यह धारणा विकसित हुई कि अनुष्ठानों के बिना संस्कार अधूरे और निष्प्रभावी होते हैं। वास्तव में, धार्मिक अनुष्ठान संस्कारों की आत्मा हैं, जिनके द्वारा वे व्यक्ति, परिवार और समाज के लिए सार्थक बनते हैं।

2. वैदिक परंपरा में धार्मिक अनुष्ठान और संस्कार
भारतीय जीवन-दृष्टि में वैदिक परंपरा का स्थान सर्वोपरि है। वैदिक युग में धर्म केवल उपासना की पद्धति नहीं था, बल्कि वह संपूर्ण जीवन का अनुशासन था। इसी अनुशासन को व्यवहार में उतारने के लिए संस्कारों का विधान किया गया, और प्रत्येक संस्कार धार्मिक अनुष्ठानों के साथ ही सम्पन्न होता था।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के मंत्र स्पष्ट प्रमाण देते हैं कि जीवन के प्रत्येक संस्कार के साथ किसी न किसी अनुष्ठान का अनिवार्य संबंध था। उदाहरणस्वरूप, *गर्भाधान संस्कार* केवल संतानोत्पत्ति का जैविक पहलू नहीं था, बल्कि इसके लिए विशेष मंत्रोच्चार और देवताओं का आह्वान किया जाता था, ताकि संतान शुद्ध, दीर्घायु और गुणवान हो [2]। इसी प्रकार *जातकर्म संस्कार* में शिशु को शहद और घृत का लेपन करते हुए वैदिक मंत्र पढ़े जाते थे, जिससे उसका जीवन मधुर और दीर्घकालिक हो।

उपनयन संस्कार तो वैदिक परंपरा का सबसे महत्वपूर्ण अनुष्ठान था। इसमें गुरु द्वारा शिष्य को गायत्री मंत्र का दीक्षा देना और अग्नि के समक्ष व्रत लेना शामिल था। यह केवल शिक्षा का प्रारंभ नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक जीवन का प्रवेशद्वार भी था। उपनयन में यज्ञोपवीत धारण करना भी अनिवार्य था, जो ज्ञान, अनुशासन और पवित्रता का प्रतीक था [3]।

विवाह संस्कार का भी गहरा वैदिक स्वरूप था। इसमें सप्तपदी (सात कदम) के साथ अग्नि के चारों ओर फेरे लगाए जाते थे और प्रत्येक फेरे के साथ विशेष मंत्रोच्चार किया जाता था। अग्नि को साक्षी मानकर दंपति यह संकल्प लेते थे कि वे जीवनपर्यंत एक-दूसरे के प्रति निष्ठावान रहेंगे और धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति में सहयोगी बनेंगे। इस प्रकार विवाह केवल सामाजिक अनुबंध न होकर एक धार्मिक अनुष्ठान था, जिसने समाज में पवित्रता और अनुशासन की गारंटी दी [4]।

अन्त्येष्टि संस्कार भी वैदिक परंपरा में अनुष्ठानों के माध्यम से सम्पन्न होता था। मृतक के शरीर को अग्नि को समर्पित करते हुए विशेष वैदिक मंत्रों का उच्चारण किया जाता था। इससे यह संदेश मिलता था कि मृत्यु अंत नहीं, बल्कि आत्मा की यात्रा का एक नया अध्याय है। यह अनुष्ठान जीवितों को भी यह स्मरण कराता था कि जीवन क्षणभंगुर है और धर्म के मार्ग पर चलना ही शाश्वत कल्याण का साधन है।

वैदिक परंपरा में इन सभी अनुष्ठानों की अनिवार्यता ने यह सुनिश्चित किया कि संस्कार केवल औपचारिकता न रहकर धार्मिक और आध्यात्मिक गहराई से जुड़े रहें। इस प्रकार अनुष्ठान संस्कारों की आत्मा बने और उन्होंने भारतीय समाज को न केवल धार्मिक दिशा दी, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक स्थायित्व भी प्रदान किया।

3. धार्मिक अनुष्ठानों के अनिवार्य अंग: मंत्र, यज्ञ और हवन

संस्कारों के सफल और प्रभावी निष्पादन के लिए धार्मिक अनुष्ठानों का विशेष महत्व है। भारतीय धार्मिक परंपरा में अनुष्ठानों को केवल कर्मकांड नहीं माना गया, बल्कि उन्हें जीवन और धर्म को जोड़ने का माध्यम समझा गया। मंत्रोच्चार, यज्ञ और हवन इन अनुष्ठानों के प्रमुख अंग हैं, जिनके बिना कोई भी संस्कार पूर्ण नहीं माना जाता।

मंत्रोच्चार संस्कारों का प्राण है। प्रत्येक संस्कार के अवसर पर उपयुक्त वैदिक मंत्रों का उच्चारण किया जाता है, जिससे उस संस्कार को धार्मिक और आध्यात्मिक बल प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए, उपनयन संस्कार में *गायत्री मंत्र* का उच्चारण अनिवार्य है। यह मंत्र केवल शिष्य को शिक्षा का प्रारंभ कराने का साधन नहीं है, बल्कि उसके भीतर आध्यात्मिक जागरण और अनुशासन की भावना भरता है। विवाह संस्कार में सप्तपदी के समय उच्चारित मंत्र दंपति को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए संकल्पित करते हैं। इसी प्रकार अन्त्येष्टि संस्कार में उच्चारित मंत्र यह विश्वास दिलाते हैं कि आत्मा अमर है और जीवन केवल एक यात्रा है [5]।

यज्ञ वैदिक परंपरा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अनुष्ठान है। यज्ञ का अर्थ है, देवताओं को आहुति देकर समाज और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करना। प्रत्येक संस्कार में किसी न किसी रूप में यज्ञ का आयोजन होता है। विवाह संस्कार में अग्नि को साक्षी मानकर फेरे लेना यज्ञ की ही परंपरा है। अन्नप्राशन, उपनयन और गर्भाधान जैसे संस्कारों में भी यज्ञ के माध्यम से शुद्धि और कल्याण की कामना की जाती है। यज्ञ का महत्व केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय भी है, क्योंकि इससे समाज में सामूहिकता और प्रकृति के प्रति श्रद्धा का भाव उत्पन्न होता है [6]।

हवन यज्ञ का ही एक विशेष रूप है, जिसमें अग्नि में आहुति दी जाती है। हवन की अग्नि को पवित्र माना जाता है और उसके माध्यम से देवताओं को आमंत्रित किया जाता है। संस्कारों में हवन का उद्देश्य केवल देवताओं को प्रसन्न करना नहीं है, बल्कि वातावरण को शुद्ध करना और सामूहिक जीवन में पवित्रता लाना भी है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी माना गया है कि हवन से वायुमंडल में रोगाणुनाशक तत्व फैलते हैं, जिससे स्वास्थ्य लाभ होता है। इस प्रकार हवन संस्कारों को न केवल धार्मिक, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी सार्थक बनाता है [7]।

इन तीनों अंगों, मंत्रोच्चार, यज्ञ और हवन ने संस्कारों को पूर्णता प्रदान की। इनके बिना संस्कार केवल बाहरी औपचारिकता रह जाते। इन अनुष्ठानों के माध्यम से संस्कारों ने व्यक्ति को धर्म से, परिवार को परंपरा से और समाज को उसकी सांस्कृतिक धारा से जोड़े रखा। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में कहा गया है, *"संस्कारो हि धर्मस्य प्राणाः"*, अर्थात् संस्कारों का जीवन तभी संभव है जब वे धार्मिक अनुष्ठानों से संपन्न हों।

4. संस्कारों में धार्मिक अनुष्ठानों का सामाजिक महत्व

भारतीय समाज में धार्मिक अनुष्ठानों का महत्व केवल आध्यात्मिक या दार्शनिक दृष्टि से नहीं है, बल्कि उनका गहरा सामाजिक आयाम भी है। संस्कारों के साथ सम्पन्न होने वाले अनुष्ठान व्यक्ति को केवल धर्म से नहीं जोड़ते, बल्कि परिवार, समुदाय और व्यापक समाज को भी एक अदृश्य सूत्र में बाँधते हैं। यही कारण है कि प्रत्येक संस्कार का आयोजन एक सामाजिक उत्सव का रूप ले लेता है।

सबसे पहले, धार्मिक अनुष्ठान *परिवारिक संगठन* को सुदृढ़ बनाते हैं। जब किसी घर में नामकरण, अन्नप्राशन या विवाह जैसे संस्कार होते हैं, तो पूरा परिवार एकत्रित होकर अनुष्ठानों में भाग लेता है। वैदिक मंत्रों की गूंज और यज्ञीय अनुष्ठान केवल धार्मिक क्रियाएँ नहीं, बल्कि परिवार के सभी सदस्यों के बीच सहयोग और आत्मीयता की भावना उत्पन्न करते हैं। उदाहरणस्वरूप, विवाह में अग्नि के चारों ओर लिए गए फेरे केवल दंपति के लिए ही नहीं, बल्कि परिवार के लिए भी भविष्य की जिम्मेदारियों का सामूहिक स्मरण कराते हैं [8]।

दूसरे, धार्मिक अनुष्ठान *समुदाय और समाज* को भी एकता प्रदान करते हैं। संस्कारों के अवसर पर पड़ोसी, रिश्तेदार और समाज के अन्य सदस्य भी सम्मिलित होते हैं। इस सामूहिक सहभागिता से सामाजिक संबंध प्रगाढ़ होते हैं और सहयोग की परंपरा सुदृढ़ होती है। उपनयन संस्कार में गुरु-शिष्य और शिष्य-सहपाठी का संबंध भी इसी सामूहिकता की अभिव्यक्ति है। अनुष्ठान इस बात का संदेश देते हैं कि व्यक्ति अकेले नहीं, बल्कि समाज का अंग है।

तीसरे, धार्मिक अनुष्ठान *सांस्कृतिक निरंतरता* के वाहक हैं। जब पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक ही प्रकार के संस्कार और अनुष्ठान सम्पन्न होते हैं, तो समाज की सांस्कृतिक पहचान अक्षुण्ण बनी रहती है। उदाहरणस्वरूप, अन्त्येष्टि संस्कार में मंत्रोच्चार और हवन केवल मृतक की आत्मा की शांति के लिए नहीं होते, बल्कि वे जीवितों को यह स्मरण कराते हैं कि वे एक दीर्घ सांस्कृतिक परंपरा का हिस्सा हैं। इस सामूहिक स्मृति ने भारतीय समाज को विदेशी आक्रमणों और सांस्कृतिक आघातों के बावजूद जीवित रखा [9]।

चौथे, धार्मिक अनुष्ठान समाज में *नैतिकता और अनुशासन* को भी मजबूत करते हैं। विवाह संस्कार में लिए गए संकल्प, उपनयन में उच्चारित गायत्री मंत्र या श्राद्ध के समय किए गए पितृ-तर्पण, सभी यह दर्शाते हैं कि व्यक्ति का जीवन केवल

निजी नहीं, बल्कि समाज और परंपरा से जुड़ा हुआ है। अनुष्ठान इस प्रकार सामाजिक आचारसंहिता का पालन कराने का माध्यम बनते हैं।

इस दृष्टि से देखा जाए तो संस्कारों के धार्मिक अनुष्ठान केवल आध्यात्मिक साधना नहीं, बल्कि सामाजिक संगठन, सामूहिक चेतना और सांस्कृतिक निरंतरता के साधन हैं। वे समाज को एक गहरे भावनात्मक और नैतिक सूत्र में बाँधते हैं, जिसके बिना समाज का स्थायित्व संभव नहीं है।

5. संस्कारों में धार्मिक अनुष्ठानों का आध्यात्मिक महत्व

संस्कारों के धार्मिक अनुष्ठानों का सबसे गहरा आयाम आध्यात्मिक है। भारतीय संस्कृति में जीवन को केवल सांसारिक दृष्टि से नहीं देखा गया, बल्कि उसे आत्मा की यात्रा और मोक्ष की दिशा में एक साधन माना गया। धार्मिक अनुष्ठान इसी आध्यात्मिक दृष्टि को व्यवहारिक जीवन में उतारते हैं।

प्रथम, अनुष्ठान व्यक्ति की *आत्मशुद्धि* का साधन हैं। उपनयन संस्कार में गायत्री मंत्र का दीक्षा लेना यह संकेत करता है कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि और ईश्वर से संबंध स्थापित करने का माध्यम है। इसी प्रकार विवाह संस्कार में अग्नि को साक्षी मानकर लिए गए संकल्प दंपति को यह स्मरण कराते हैं कि उनका जीवन केवल भौतिक संबंधों पर आधारित नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक अनुबंध भी है [10]।

द्वितीय, धार्मिक अनुष्ठान व्यक्ति को *मोक्षमार्ग* की ओर उन्मुख करते हैं। अन्त्येष्टि संस्कार इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण है। मृतक के शरीर को अग्नि को समर्पित करते समय वैदिक मंत्रों का उच्चारण यह दर्शाता है कि आत्मा अमर है और शरीर केवल अस्थायी साधन है। यह अनुष्ठान जीवितों को भी यह स्मरण कराता है कि धर्म और सत्य के मार्ग पर चलना ही परम लक्ष्य है। श्राद्ध संस्कार भी इसी आध्यात्मिक निरंतरता का प्रतीक है, जिसमें जीवित व्यक्ति अपने पूर्वजों का स्मरण करके आत्मा की अखंडता और मोक्ष की दिशा को स्वीकार करता है [11]।

तृतीय, धार्मिक अनुष्ठान व्यक्ति के भीतर *दार्शनिक चेतना* जगाते हैं। प्रत्येक संस्कार के साथ जुड़े मंत्रों और यज्ञों में गहरे दार्शनिक भाव छिपे हैं। जैसे, "ॐ असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय" [12] यह प्रार्थना केवल एक धार्मिक अनुष्ठान का हिस्सा नहीं, बल्कि व्यक्ति की आत्मा को अज्ञान से ज्ञान, अंधकार से प्रकाश और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाने की दिशा है।

चतुर्थ, अनुष्ठानों ने समाज में *आध्यात्मिक अनुशासन* की परंपरा स्थापित की। जब व्यक्ति बचपन से ही संस्कारों के साथ धार्मिक अनुष्ठानों में सम्मिलित होता है, तो उसके भीतर यह भावना विकसित होती है कि जीवन केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि ईश्वर और आत्मा से भी जुड़ा हुआ है। यही अनुशासन भारतीय समाज की आध्यात्मिक गहराई और स्थायित्व का मूल रहा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि धार्मिक अनुष्ठानों ने संस्कारों को केवल बाहरी कर्मकांड से ऊपर उठाकर आध्यात्मिक यात्रा का साधन बनाया। वे व्यक्ति की आत्मा को शुद्ध करते हैं, मोक्ष की दिशा दिखाते हैं और जीवन को दार्शनिक चेतना से भर देते हैं। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में कहा गया है, *"अनुष्ठानेन संस्कारः, संस्कारेण मोक्षः"* अर्थात् अनुष्ठान से संस्कार पूर्ण होते हैं और संस्कार से मोक्ष की प्राप्ति संभव होती है।

6. निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति की गहराई और दीर्घजीविता का रहस्य संस्कारों और उनसे जुड़े धार्मिक अनुष्ठानों में निहित है। यह तथ्य निर्विवाद है कि संस्कार केवल तभी सार्थक और पूर्ण माने जाते हैं जब वे धार्मिक अनुष्ठानों के साथ सम्पन्न हों। मंत्रोच्चार, यज्ञ, हवन, आहुति, संकल्प और आशीर्वाद जैसे अनुष्ठान न केवल संस्कारों को पवित्र बनाते हैं, बल्कि उन्हें सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक गहराई भी प्रदान करते हैं।

इस शोधपत्र के अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि धार्मिक अनुष्ठानों ने संस्कारों को तीन स्तरों पर महत्वपूर्ण बनाया। व्यक्तिगत स्तर पर उन्होंने आत्मशुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया। परिवारिक स्तर पर उन्होंने एकता, सहयोग और उत्तरदायित्व की भावना को गहराई दी। सामाजिक स्तर पर उन्होंने सामूहिक चेतना, सांस्कृतिक निरंतरता और नैतिक अनुशासन को मजबूत किया। इस प्रकार धार्मिक अनुष्ठानों ने संस्कारों को केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं रहने दिया, बल्कि उन्हें समाज और संस्कृति का जीवंत अंग बना दिया।

वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक अनुष्ठानों की प्रासंगिकता बनी रही है। उपनयन में गायत्री मंत्र की दीक्षा, विवाह में सप्तपदी और अन्त्येष्टि में अग्नि-संस्कार—ये सभी उदाहरण दर्शाते हैं कि अनुष्ठानों के बिना संस्कार अधूरे और निष्प्रभावी हैं। अनुष्ठान ही संस्कारों को जीवन, समाज और धर्म से जोड़ने वाले सेतु हैं।

आज के समय में भी जब समाज तीव्र परिवर्तन और वैश्वीकरण के दबाव में है, धार्मिक अनुष्ठान हमें हमारी जड़ों से जोड़े रखते हैं। वे केवल परंपरा नहीं, बल्कि पहचान और स्थिरता के प्रतीक हैं। इसलिए यह कहना उचित होगा कि संस्कारों में धार्मिक अनुष्ठानों का महत्व भारतीय संस्कृति की आत्मा है। यही परंपरा हमें "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना तक पहुँचाती है और जीवन को धर्म, समाज और ईश्वर से जोड़ती है [13]।

संदर्भ

1. आपस्तंब धर्मसूत्र (2007). आपस्तंब धर्मसूत्र: संस्कृत एवं हिंदी अनुवाद (डा. शिवशंकर मिश्र, संपादक). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज. (प्रकरण 2, पृ. 62-65).
2. ऋग्वेद (2011). ऋग्वेद संहिता: हिंदी व्याख्या सहित (डा. सत्यव्रत शास्त्री, अनुवादक). दिल्ली: नाग प्रकाशन. (मंडल 10, सूक्त 85, पृ. 678-682).
3. शतपथ ब्राह्मण (2004). शतपथ ब्राह्मण: मूल संस्कृत पाठ एवं हिंदी अनुवाद (डॉ. जगदीश लाल शास्त्री, संपादक). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज. (खंड 11, पृ. 452-459).
4. मनुस्मृति (2005). मनुस्मृति (पं. रामचन्द्र शर्मा, संपादक). दिल्ली: नाग प्रकाशन. (अध्याय 3, श्लोक 55-60, पृ. 119-124).
5. अथर्ववेद (2002). अथर्ववेद संहिता: हिंदी अनुवाद सहित (डा. रामगोपाल शर्मा, अनुवादक). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज. (कांड 19, पृ. 612-618).
6. तैत्तिरीय ब्राह्मण (2006). तैत्तिरीय ब्राह्मण (डा. बालशास्त्री हरदास, संपादक). दिल्ली: संस्कृत भारती. (खंड 3, पृ. 210-215).
7. बृहदारण्यक उपनिषद (2003). बृहदारण्यक उपनिषद: हिंदी अनुवाद सहित (डा. सत्यव्रत शास्त्री, अनुवादक). दिल्ली: नाग प्रकाशन. (अध्याय 6, पृ. 189-193).
8. मनुस्मृति (2005). मनुस्मृति (पं. रामचन्द्र शर्मा, संपादक). दिल्ली: नाग प्रकाशन. (अध्याय 3, श्लोक 67-70, पृ. 128-131).
9. व्यास, महर्षि (2010). महाभारत: शांति पर्व (पं. किशोरीलाल गोस्वामी, संपादक). गोरखपुर: गीता प्रेस. (शांति पर्व, पृ. 321-327).

10. शतपथ ब्राह्मण (2004). शतपथ ब्राह्मण: मूल संस्कृत पाठ एवं हिंदी अनुवाद (डॉ. जगदीश लाल शास्त्री, संपादक). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज. (खंड 11, पृ. 460-465).
11. गरुड़ पुराण (2008). गरुड़ पुराण: हिंदी अनुवाद सहित (डा. गोविन्दलाल शर्मा, संपादक). वाराणसी: चौखम्बा विद्या भवन. (अध्याय 4, पृ. 87-90).
12. बृहदारण्यक उपनिषद (2003). बृहदारण्यक उपनिषद (डा. सत्यव्रत शास्त्री, अनुवादक). दिल्ली: नाग प्रकाशन. (अध्याय 1, पृ. 45-47).
13. व्यास, महर्षि (2011). महाभारत: अनुशासन पर्व (गीता प्रेस संस्करण). गोरखपुर: गीता प्रेस. (अनुशासन पर्व, पृ. 214-220).